P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

ब्रज चौरासी कोस यात्रा की ऐतिहासिक परम्परा, स्वरूप तथा महत्व

भरत सिंह
शोधार्थी,
इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
डॉ0 बी0आर0ए0वि0वि0,
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सुगम आनन्द
विभागाध्यक्ष,
इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
डॉ0 बी0आर0ए0वि0वि0,
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारत वर्ष में तीर्थासन की परम्परा अति प्राचीन रही है। भारत की सांस्कृतिक एकता को एक सूत्र में बांधने के लिए इन तीर्थ यात्राओं का संचालन होता आया है। ब्रज चौरासी कोस की यात्रा भी इस कड़ी का एक महत्वपूर्ण पड़ाव रही है।

ब्रज का क्षेत्रफल चौरासी कोस के रूप में माना जाता है। कोस पुराने समय का एक माप है तथा एक कोस में लगभग तीन किमी होते हैं। इस प्रकार ब्रज का कुल क्षेत्रफल 252 किमी का है। प्राचीन युग से ही ब्रज मण्डल में श्रीकृष्ण भक्ति का प्रभाव पूरे ब्रज क्षेत्र में रहा। इस रूप में चौरासी कोस ब्रज यात्रा का धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व और बढ़ जाता है। ब्रज चौरासी कोस की यात्रा में अनेक धार्मिक स्थल, सरोवर, कुंड, वन, उपवन इत्यादि के दर्शन, ब्रज के भगवदीय स्थलों पर पूजन–अर्चन करके कृपा प्राप्त करने का यथेष्ट ध्येय भी रहा है। ब्रज यात्रा का विधिवत आरम्भ मध्यकालीन वैष्णव सन्तों के ब्रज में प्रादुर्भाव के साथ हुआ था। स्वामी वल्लभाचार्य, गोस्वामी विट्ठलनाथ तथा चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण लीला स्थलों की खोज करके इन स्थलों की प्रदक्षिणा की परम्परा का निवर्हन किया। तत्पश्चात् यह यात्रा परस्पर अलौकिक प्रेमानुभूति का माध्यम रही है।

मुख्य शब्द : ब्रज मण्डल, यात्रा, कुंड, उपवन, सरोवर, चैतन्य, वल्लभाचार्य, विट्ठलनाथ, वृन्दावन।

प्रस्तावना

ब्रज यात्रा की ऐतिहासिकता के प्रामणिक सन्दर्भ श्रीमद भागवत में मिलते हैं। इस क्रम में अक्रूर की ब्रजयात्रा का वर्णन शुकदेवजी ने इस प्रकार किया हैः– अक्रूरजी रात्रि में मथुरापुरी में ही रहे। अगले दिन प्रातः ही रथ पर चढ़कर नन्दजी के निवास को निकले। मार्ग में अक्रूरजी को भगवान विष्णु की परमभक्ति का आभास हुआ। इस प्रकार ब्रज यात्रा में अनेक भावों में विचार करने लगे।

अक्रूरोऽपि च तां रात्रिं महामतिः।
उशित्वा रथमास्थाय प्रययौ नन्दगोकुलम्।।
गच्छन्यथि महाभागो भगवत्यम्बुजेक्षणे।
भक्तिं परामुपगत स्वमेद चिन्तयत्।।[1]

अक्रूरजी की ब्रज यात्रा के अलावा उद्धवजी ने ब्रजयात्रा की थी। इसका वर्णन श्रीमद्भागवत में दिया गया है। ब्रज की यात्रा में उद्धवजी कृष्ण की आज्ञा से गोपियों को उपदेश देने हेतु ब्रज की यात्रा पर जाते है। श्रीकृष्ण की आज्ञा से उद्धवजी इस यात्रा में नाना प्रकार के मार्गों पर भ्रमण करते हैं। नन्दजी के गोकुल, नंदगांव आते हैं।

इत्युक्त उद्धवो राजन्सन्देषं भर्तुराहतः।
आदाय रथमारुहा प्रययौ नन्दगोकुलम्।।[2]

द्वारका में यदुवंश के नष्ट हो जाने के बाद श्रीकृष्ण के प्रपौत्र वज्रनाभ ने ब्रज की यात्रा की थी तथा वहाँ मूर्तियाँ स्थापित कराई थी।[03] स्कन्द पुराण में वज्रनाभ की उद्धव से गोवर्धन में भेंट का उल्लेख किया गया है।[04] वज्रनाभ ने मथुरा में श्रीकृष्ण के समय के क्रीड़ास्थलों, गाँवों एवं कुड़ों का नामकरण परम्परानुरूप किया।[05] छटी शती ई0पू0 में जैन तथा बौद्ध धर्म का प्रभाव बढ़ने लगा। धीरे–धीरे श्रीकृष्ण के लीला स्थलों का आकर्षण कम होने लगा। कुषाणों के शासनकाल (78 ई0 से आरम्भ) में ब्रज क्षेत्र में बौद्ध धर्म का प्रभाव और बढ़ा। फलस्वरूप मथुरा बौद्ध मूर्ति निर्माण कला का प्रमुख केन्द्र बना। छठी तथा सातवीं शताब्दी में चीनी यात्रियों फाह्मयान एवं हवेनसांग ने मथुरा भ्रमण के

संस्मरणों में बौद्ध स्तूप, चैत्य तथा संधारामों का उल्लेख किया है। 06 तदन्तर, 13वीं शताब्दी में वैश्णव धर्म व्यापक प्रचार होने लगा। इस प्रकार ब्रज के गौरव की पुर्न स्थापना का कार्य प्रारम्भ हुआ। इस कड़ी में वैष्णव सम्प्रदाय के प्रर्वतक निम्बार्काचार्य का 13वीं शताब्दी में प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने मथुरा को भागवत सम्प्रदाय का केन्द्र बनाया।[7]

ब्रज चौरासी कोस वन यात्रा से सम्बन्धित ग्रन्थ ''वन यात्रा परिक्रमा'' से मिलता जुलता है। नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी में मायाशंकर याज्ञिक के संग्रह में सुरक्षित है।

इसकी रचना का काल संवत 1900 है। क्योंकि इसमें लिखा है : ''इति श्री कामवन के कुण्डन कीर्ति गति समाप्त। मिति आशाढ़वर्दिण संवत् 1900 लिखंत मथुराजी रामघाट मध्ये यमुनातटे।''[8]

15वीं शताब्दी के मध्य में माध्व सम्प्रदाय के आचार्य माघवेन्द्र पुरी ने ब्रज की यात्रा की थी। 09 तदन्तर ब्रज में वैष्णव सम्प्रदाय की शाखाओं की सक्रियता बढ़ने लगी। इस क्रम में स्वामी वल्लभाचार्य की ब्रज की यात्राओं का विषद वर्णन प्राप्त होता है। उनकी प्रथम ब्रज यात्रा अपने शिष्य दामोदर दास हरसानी के साथ संवत 1548 (1492ई0) में आरम्भ हुई।[10] मथुरा के उजागर चौबे को लेकर स्वामी वल्लभ ने ब्रज के विभिन्न विलुप्त स्थलों को खोज निकाला।[11] उनके साथ वासुदेव टकड़ा, यादवेन्द्रदास कुम्हार, गोविन्द दुबे, माधव भट्ट सम्मिलित थे।[12] गिरिराज आकर श्री नाथ जी की सेवा और प्रबन्ध करते थे। उनके जीवन–चरित्र से तीन यात्राओं का पता लगता है जो सं० 1568 तक समाप्त हो जाती है। इस प्रकार उनकी ब्रज की तीन बार यात्रा तो अवश्य ही होनी चाहिए। स्वामी वल्लभाचार्य ने ब्रज के जिन स्थानों पर रूककर कर श्रीमदभागवत परायरण किया वह बैठकें कहलाते है। समस्त भारतवर्ष में ऐसी चौरासी बैठकें हैं। सं 1550 वि0 में ब्रज में जिन स्थानों पर वे उजागर चौबे के साथ गये और वहाँ से लौटकर उनको 100 रू. दक्षिणा स्वरूप प्रदान कर अपना पुरोहित बनाया।13 स्वामी वल्लभाचार्य की ब्रज यात्रा के स्थानों का वर्णन इस प्रकार हैं:–

1. गोकुल – गोविन्द घाट पर 1 यहाँ सं0 1550 वि0 श्रावण शुक्ल 11 के दिन प्रथम बार गोकुल आने पर 'ब्रह्म–सम्बन्ध की आज्ञा और श्री भगवान् को पवित्रा पहिराये।[14]
2. गोकुल – भीतर की बड़ी बैठक उन्होंने निवास किया था।
3. गोकुल– शैया मन्दिर की बैठक।
4. वृन्दावन– वंशीघाट के निकट यहाँ प्रभुदास जलौटा खन्नी की स्थल का महात्म्य बताकर बिना स्नान किये ही सखड़ी प्रसाद खिलाया।
5. मथुरा– विश्रामघाट जहां पूर्व में यह स्थान ष्मषान था। इसे हटाने के लिए स्वामी वल्लभाचार्य ने कृष्ण दास मेघन द्वारा अपने कमण्डल से जल छिड़कवाया था। तदन्तर यहाँ असकुण्डा से लेकर सूर्य–कुण्ड तक बस्ती बस गई है। सं0 1550 वि0 आश्विन कृष्णा 12 को स्वामी वल्लभ ने उजागर चतुर्वेदी को यहां का पुरोहित नियुक्त किया था तथा ब्रज–यात्रा प्रारम्भ की। स्वामी वल्लभाचार्य ने ब्रज के जिन–जिन स्थानों पर भ्रमण किया तथा भागवत का परायण किया था, सबका वरांग इस रूप में है।[15]

मधुवन

कृष्ण कुण्ड पर कदम्ब के नीचे।

तालवन कमोदवन

तालवन में स्वामी वल्लभ ने किसी भगवत स्वरूप के न होने की स्थिति में भागवत की पारायण नहीं की। परन्तु कमोदवन में में पारायण की।

बहुलावन

कृष्ण कुण्ड के ऊपर उत्तर दिशा में वट वृक्ष के नीचे। ब्राह्मणों की प्रार्थना पर स्वामी वल्लभाचार्य ने मुसलमान हाकिम को चमत्कार दिखाकर बहुला गाय की पूजा प्रारम्भ कराई थी।

राधा कुण्ड कृष्ण कुण्ड

राधा कुण्ड में स्वामिनीजी के महल के निकट प्रवास किया था।

मानसी गंगा

घाट के ऊपर उन्होंने प्रवास किया था। मान्यता है कि यहाँ छः महीना पूर्व से श्री कृष्ण चैतन्य बैठ कर भगवत नाम का जप कर रहे थे। वे स्वामी वल्लभ के आने पर उनसे मिले।

परासोली

चन्द्र सरोवर के निकट प्रवास किया था।

आन्योर

सद्दू पाण्डे के घर में रूके थे।

गोविन्द कुण्ड

चैतन्य के 'कृष्ण प्रेमामृत नामक ग्रन्थ को इस स्थान पर प्रदान किया गया था।

सुन्दर शिला

गिर्राज पर्वत इस स्थान पर स्वामी वल्लभाचार्य ने श्री नाथ जी का दीपावली और अन्नकूट का उत्सव किया था।

गिरिराज

श्री नाथ जी के मन्दिर के दक्षिण भाग में एक चौंतरी है। जहाँ सेवा करने के पश्चात् आप विराजते थे। यहाँ प्रबोधिनी टीका लेखन तक रहे। (यह बैठक प्रकट नहीं है)

कामवन

सुरभि कुण्ड या श्री कुण्ड। जहाँ माना कि स्वामी वल्लभ यहाँ रहने वाले एक ब्रह्म–पिशाच को मोक्ष दिलाया था।

गहरवन

यह स्थान बरसाना– कुण्ड के ऊपर। स्थित है इस स्थान पर एक अजगर को स्वामी वल्लभ ने देखा जिसे बहुत से चीटे खा रहे थे। स्वामी वल्लभ ने जल से सींच कर उसकी रक्षा की थी। सेवकों के पूछने पर उन्होंने बतलाया था कि यह वृन्दावन का एक महन्त था। जिसने अपने शिष्यों से धन लिया था परन्तु उनके उद्वार का कोई मार्ग नहीं बतलाया। आज उसके शिष्य इस रूप में इससे बदला ले रहे हैं।[16]

संकेतवन

छौंकर के वृक्ष के नीचे बैठे थे।

नन्दगाँव

यहाँ छह मास तक यहां रूके थे।

कोकिलावन

यह कृष्ण कुण्ड के ऊपर स्थित है। इस स्थान पर एक मास विराजे थे यहाँ निम्बार्क सम्प्रदाय के चतुरा नागा नामक एक साधु और उनके साथियों के आग्रह करने पर स्वामी वल्लभ चरण ने उन्हें भोजन कराया था साथ ही प्रार्थना करने पर कहा था कि कुछ वर्षो के बाद हमारे वंशज तुम्हें अपना शिष्य बना लेगें।

भांडीरवन

इस स्थान पर माध्व सम्प्रदाय के महन्त व्यास तीर्थ ने उन्हें अपना शिष्य बनाना चाहा था। परन्तु वे इस कार्य में सफल न हो सके।

मानसरोवर

यहाँ स्वामी वल्लभाचार्य ने दामोदर दास हरजानी को अलौकिक दर्शन दिये थे। फिर यहाँ से जाकर गोकुल में नन्द–महोत्सव किया। साथ ही वृक्ष में चादर बाँध कर नवनीत लाल जी को पालना झुलाया था।

इस प्रकार स्वामी वल्लभाचार्य ने कुल 12 वनों की यात्रा की थी। इसका सन्दर्भ उल्लेख नारद पुराण (उत्तर भाग 79 अध्याय) में उपलब्ध है। यद्यपि इसमें लोहजंघवन (लोहवन) का वर्णन नहीं है। महावन का भी उल्लेख गोकुल नाम से किया गया है। वर्तमान समय में महावन को ही प्राचीन गोकुल कहा जाता हैं।[16]

मध्यकाल में स्वामी वल्लभाचार्य के समकालिक बंगाल के वैष्णव सन्त चैतन्य महाप्रभु ने भी ब्रज की कि ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक यात्रा की थी।

संवत 1573 में चैतन्य महाप्रभु ब्रज यात्रा पर आये थे।[17] चैतन्य महाप्रभु ने 15वीं शताब्दी में बंगाल में कृष्ण भक्ति का व्यापक प्रचार किया था। चैतन्य महाप्रभु ने ब्रज यात्रा वृतान्त में राधाकृष्ण के लीला स्थलों का वर्णन किया है जिसमें विश्राम घाट, केशवदेव के दर्शन, यमुना के 24 घाटों पर स्नान कर स्वयंभूदेव, विश्राम, दीर्घविष्णु, भूतेश्वर महादेव, गोकर्णी आदि तीर्थो के दर्शन किये थे। चैतन्य महाप्रभु ने मधुवन, तालवन, कुमुदवन, वृन्दावन, वाटिगॉव, राधाकुण्ड, कुसुम सरोवर, गोवर्धन के हरिदेव जी के भी दर्शन किये थे। प्रातः काल मानसी गंगा में स्नान कर गोवर्धन की परिक्रमा करके गाठौली गये। तथा कामवन गये थे। यहाँ के तीर्थ स्थलों के दर्शन कर खिदरवन, भाडीरवन, भद्रवन यहॉ से लोहवन, महावन, गोकुल से मथुरा आकर ब्रज यात्रा को समाप्त किया था।[18] चैतन्य महाप्रभु की ब्रज यात्रा व्यक्तिगत यात्रा थी। ब्रज क्षेत्र में वैष्णव भक्ति में कीर्तन, भजन, गायन की परम्परा को उन्होंने प्रारम्भ किया। संवत 1602 में चैतन्य सम्प्रदाय के भक्त नारायण भट्ट ने ब्रज की यात्रा की थी। उन्होंने ब्रज के समग्र रूप को सामने लाने का मुख्य कार्य किया था।[19] ब्रज यात्रा को व्यवस्थित स्वरूप देने में नारायण भट्ट का भी विशेष योगदान रहा।[20] जिन्होंने ब्रज भक्ति विलास ग्रन्थ की रचना की थी। जिसमें ब्रज के स्थलों, वनों, पहाड़ों तथा उपवनों का उल्लेख किया गया है।

ब्रज चौरासी कोस की यात्रा स्वामी वल्लभाचार्य के पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ ने 1538 ई0 में अपने भ्राता गोस्वामी गोपीनाथ के साथ की थी।[21] इस ब्रज यात्रा का क्रम वही था जो स्वामी वल्लभाचार्य ने बनाया था। गोस्वामी विट्ठलनाथ ने प्रथम सामूहिक ब्रज यात्रा 1543 ई0 में की थी। गोस्वामी विट्ठलनाथ की चौरासी कोस की यात्रा में 12 वन के साथ 12 उपवनों तथा अन्य लीला स्थलों की पदयात्रा की जाने लगी।

1571 ई0 के पश्चात् ब्रज चौरासी कोस की यात्रा में विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों ने ब्रज क्षेत्र के वीहड़ वन, उपवनों से होकर ब्रजयात्रा के मार्ग बनाये गये। ब्रज यात्रा के मार्ग में पड़ने वाले राधाकृष्ण से जुडे हुए तीर्थ स्थलों को खोज निकला तथा तीर्थ स्थलों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती गयी। बीकानेर के वैष्णव भक्त माहेश्वरी ने 1656 ई0 में ब्रज चौरासी कोस की यात्रा की थी। औरंगजेब के शासन काल में उसकी धार्मिक नीति के परिणाम स्वरूप ब्रज क्षेत्र के हिन्दू तीर्थ स्थलों, धार्मिक कर्मकाण्ड, तथा तीर्थ यात्राओं पर प्रतिबन्ध लगाने से ब्रज चौरासी कोस की यात्रा प्रायः बन्द हो गयी।

मुगल सम्राज्य के पतन के बाद ब्रज क्षेत्र में जाट, मराठा, राजपूत शासकों का शासन स्थापित हुआ। इस क्षेत्र में वैष्णव सम्प्रदायों ने धार्मिक कर्मकाण्डों का कार्य फिर से प्रारम्भ किया। ब्रज क्षेत्र के विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों के भक्ति सन्तों ने अपनी–अपनी शिष्य मण्डली परम्परा के अन्तर्गत कृष्ण भक्ति का प्रचार–प्रसार शुरू किया। वैष्णव भक्ति सन्तों के शिष्यों ने ब्रज चौरासी कोस की यात्रा के माध्यम से कृष्ण भक्ति तथा ब्रज संस्कृति के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 19वीं शताब्दी में वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव भक्त पुरूषोत्तम दास ने ब्रज चौरासी कोस की यात्रा को पुनः प्रारम्भ किया।

ब्रज यात्रा के तीर्थ स्थलों व सीमा विस्तार में वृद्धि की जाती रही। ब्रज चौरासी कोस की यात्रा का यही क्रम तब से लेकर आज तक चला आ रहा है। इस काल में ब्रज चौरासी कोस की यात्रा की परिधि पूरे ब्रज मण्डल की परिमाप की होने लगी।

ब्रज चौरासी कोस की यात्रा गोकुल से मथुरा पहुँचकर विश्राम घाट पर नियम, संकल्प तथा यमुना पूजन के साथ प्रारम्भ होती है। इस ब्रज यात्रा के मार्ग में 25–26 पडाव स्थल निर्धारित कर दिये गये जिससें यात्रीगण इन पड़ाव स्थलों पर रात्रि विश्राम कर सकें। ब्रज यात्रा के मार्ग में वन, उपवन, कुण्ड, सरोवर, राधाकृष्ण तीर्थ स्थल तथा वैष्णव सम्प्रदायों की बैठके व निवास स्थलों के दर्शन यात्रीगण करते हुए पदयात्रा करते है। साथ ही मार्ग व पड़ाव स्थलों पर साधु–सन्तों के प्रवचन तथा रासलीला का आनन्द प्राप्त करते हैं।

साहित्यावलोकन

1. दास, गोविन्द, अग्रवाल, राम नारायण, (1959), ब्रज और ब्रज यात्रा, भारतीय विश्व प्रकाशन, दिल्ली। इस ग्रन्थ में वैदिक युग से लेकर वर्तमान समय तक के कालखण्ड में ब्रज का परिचय दिया गया है। साथ ब्रज यात्रा की प्राचीनता का भी वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है। उदाहरण के लिए अक्रूर जी की ब्रज यात्रा, उद्धव की ब्रज यात्रा। इस ग्रन्थ में मध्यकालीन

समय में पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक स्वामी वल्लभाचार्य की ब्रज यात्राओं, चैतन्य महाप्रभु की ब्रज यात्रा तथा गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के ब्रज यात्राओं का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। ब्रज यात्रा मार्ग में अनेक धार्मिक स्थलों तथा पड़ावों का भी वर्णन किया गया है। ग्रन्थ में ब्रज यात्रा के सन्दर्भों को प्रामाणिकता प्रदान करने के लिए पौराणिक तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों को उधृत किया गया है।

2. मीतल, प्रभुदयाल (1966), ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली। यह ग्रन्थ दो खण्डों में विभक्त किया गया है। प्रथम खण्ड में ब्रज संस्कृति की भूमिका के अन्तर्गत ब्रज की रूपरेखा, भौगोलिक स्थिति, ब्रज की सांस्कृतिक यात्रा, रासलीला, ब्रज वर्णन है। इस ग्रन्थ के द्वितीय खण्ड में ब्रज के इतिहास पर विस्तृत लेखन किया गया है।

   शूरसेन जनपद काल से लेकर मौर्य काल, कुषाण काल, गुप्तकाल, राजपूत काल तथा भारत में मुस्लिम शासन काल में ब्रज की स्थिति पर विस्तृत लेखन किया गया है। इसके साथ अन्तिम अध्यायों में आधुनिक समय में ब्रज के विकास पर प्रकाश डाला गया है। ब्रज के साहित्य, व कला पर लेखन किया गया है।

   ब्रज की सांस्कृतिक विरासत तथा इतिहास पर यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इतना विस्तृत विवरण कहीं पर एक ग्रन्थ में नहीं मिलता है।

3. मीतल, प्रभुदयाल (1968), ब्रज के धर्म सम्प्रदायों का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। यह ग्रन्थ ब्रज के धार्मिक सम्प्रदायों के इतिहास, उनके नियम, सिद्धान्त आंचरण, संस्थापकों; अनुयायियों का विस्तृत विवरण इस ग्रन्थ में दिया गया है। प्राचीन भारत में विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों की स्थापना में वैदिक धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म के अलावा भागवत धर्म, वैष्णव धर्म, शैव धर्म के साथ–साथ विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों जैसे चैतन्य, पुष्टि, निम्बार्क, गौड़ीय के बारे में भी विस्तृत लेखन किया गया है।

   ब्रज में विभिन्न कालखण्डों में धर्म सम्प्रदायों की स्थापना विकास, सिद्धान्त तथा प्रभाव का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ की विशेषता रही है। यद्यपिइ स ग्रन्थ में ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक सन्दर्भों का अभाव है।

4. कपूर, अवध बिहारी लाल, (1984), ब्रज के रसिकाचार्य, श्री कृष्ण जन्मस्थान, सेवा संस्थान, मथुरा। इस पुस्तक में ब्रज के इतिहास पर विस्तृत लेखन किया गया है। साथ ही अनेक धर्म वेत्ताओं तथा वैष्णव भक्तों का विवरण दिया गया है। उदाहरण के लिए माधवेन्द्रपुरी, सनातन गोस्वामी, श्रीरूप गोस्वामी, नारायण भट्ट, कृष्णदास, कविराज तथा नरोत्तम ठाकुर इत्यादि।

5. भास्कर, उमा (1994), मथुरा महात्म्य, वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन। इस पुस्तक में मथुरा तीर्थ की प्रशंसा, मथुरा का प्रादुर्भाव, मथुरा परिक्रमा की ऐतिहासिकता को प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में अष्टादश पुराणों जैसे वाराहपुराण, को उधृत करके मौलिकता प्रदान की गई है। मथुरा तथा उसके निकट के विभिन्न दर्शनीय स्थलों को भी इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक स्थल के बारे में संक्षेप में टीका दी गई है।

6. भट्ट, नारायण, ब्रज भक्ति विलांस (संवत 2008), प्रकाशक बाबा कृष्ण दास, कुसुम सरोवर, मथुरा नारायण भट्ट मध्यकालीन वैष्णव सम्प्रदाय के उदात्त अनुयायी थे। चैतन्य महाप्रभु की ब्रज यात्रा के समय नारायण भट्ट ब्रज में प्रवास कर रहे थे। ब्रज भक्ति विलास ग्रन्थ में ब्रज मंडल के वन, उपवन, कुंज, कुंड, तालाब, देवमूर्ति तथा कृष्ण की लीलास्थली का विशद वर्णन किया गया है। मूल पाठ संस्कृत भाषा में है। मध्यकाल में श्रीकृष्ण की लीला स्थलों की खोज का कार्य स्वामी वल्लभाचार्य, गोस्वामी विट्ठलनाथ तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ–साथ चैतन्य सम्प्रदाय के द्वारा किया गया था। ब्रज विलसं ग्रन्थ की रचना श्री नारायण भट्ट ने संवत 1609 में राधाकुंड में पूरी की थी। इस प्रकार नारायण भट्ट ने ब्रज मंडल के लुप्त हो चुके धार्मिक तथा लीला स्थलों की खोज में महत्वपूर्ण योदान दिया। यह ग्रन्थ 13 अध्यायों में विभक्त किया गया है। गौड़ीय सम्प्रदाय परम्परा को आगे बढ़ाने में नारायण भट्ट का अमूल्य योगदान था।

7. वाजपेयी, कृष्णदत्त, (संवत 2011), ब्रज का इतिहास, अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा। इस ग्रन्थ में ब्रज की पौराणिकता, भौगोलिक स्थिति, धर्म, कला तथा संस्कृति का विवरण प्रस्तुत किया गया है। ग्रन्थ को दो भागों में विभक्त किया गया है। ब्रज के इतिहास का प्रस्तुतीकरण साहित्यिक, पुरातात्विक तथा विदेशी यात्रियों के विवरणों के आधार पर किया गया है। इस रूप में लेखन में मौलिकता दिखाई देती है। इस ग्रन्थ के द्वितीय भाग में ब्रज की सांस्कृतिक परम्पराओं जैसे उत्सव, त्यौहार, यात्राऐं तथा पर्वों पर भी विस्तृत लेखन किया गया है। इस प्रकार ब्रज के इतिहास, धर्म संस्कृति, कला तथा सांस्कृतिक परम्पराओं पर विस्तृत लेखन का कार्य लेखक ने प्रामाणिकता के साथ किया है।

8. महाराज, श्रीस्वरूपदास (2011), श्री श्री गोवर्धन परिक्रमा, शब्द संयोजक, मथुरा। इस पुस्तक में गोवर्धन की पौराणिकता के साथ–साथ परिक्रमा के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। गोवर्धन परिक्रमा मार्ग में दानघाटी, मानसीगंगा, मुखारविन्द, विविध कुंडों जैसे सुरभि कुंड, इन्द्रकुंड, सूरजकुंड, राधाकुंड का वर्णन किया गया है। साथ ही श्री चैतन्य महाप्रभु की बैठक, श्री वल्लभाचार्य की बैठक के साथ यात्रा मार्ग के अन्य मन्दिरों तथा पड़ाव स्थलों का वर्णन किया गया है।

9. षर्मा, मुरलिका (2014), रसीली ब्रज यात्रा, श्रीमान् मन्दिर सेवा संस्थान, बरसाना, मथुरा। ब्रज भूमि भारतीय जनमानस के धार्मिक तथा सांस्कृतिक आकर्षण का केन्द्र रही है। श्रीकृष्ण की लीलावस्था होने के कारण करोड़ों भक्त प्रतिवर्ष इस पवित्र भूमि की परिक्रमा के लिए यहाँ आते हैं। ब्रज यात्रा के

विविध पक्षों जैसे प्राचीनता, यात्रा मार्ग के धार्मिक स्थल, वन, उपवन, तालाब, घाट, कुंड तथा सरोवरों के दिग्दर्शन होते हैं। इस ग्रन्थ में विस्तृत रूप में इन सभी के बारे में सन्दर्भों सहित विवरण दिया गया है। पुस्तक में विविध पुराणों में वर्णित सन्दर्भों का परिचय देकर विविध सूचनाओं को मौलिकता प्रदान करने की चेष्टा की गई है। रसीली ब्रज यात्रा दो खण्डों में विभक्त की गई है। यद्यपि ऐतिहासिक साक्ष्यों के रूप में पुरातात्विक स्रोतों का इस ग्रन्थ में अभाव है।

10. कंछल, बनवारी लाल (2018), श्रीकृष्ण की लीलास्थली, मथुरा–वृन्दावन, मनोज पब्लिकेशंस, दिल्ली। इस पुस्तक में मथुरा तथा वृन्दावन की परिक्रमा मार्ग के स्थलों का परिचय दिया गया है। साथ ही, मथुरा के प्रमुख मन्दिरों जैसे द्वारकाधीश, भूतेष्वर महादेव, रंगेश्वर मन्दिर, राधा गोविन्द मन्दिर तथा जय गुरूदेव मन्दिर का वर्णन किया गया है। मथुरा सात कोस परिक्रमा का विवरण भी दिया गया है। साथ ही वृन्दावन तथा गोवर्धन की यात्रा तथा परिक्रमा मार्ग का विवरण दिया गया है। इसके साथ, मथुरा, गोवर्धन तथा वृन्दावन के वन, आश्रम, तथा कुंडों का भी वर्णन किया गया है।
11. राय, उपेन्द्रनाथ, (2018), पुष्टिमार्ग की वार्ताओं का परिचय, ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन। शुद्धाद्वैतदर्शन के प्रवर्तक स्वामी वल्लभाचार्य के व्यावहारिक विचार दर्शन को जानने का श्रेष्ठतम साधन वार्ता साहित्य है। जिस समय में वार्ता साहित्य लिखा गया था। उस समय विचाराभि व्यक्ति का माध्यम गद्य न होकर पद्य था। वार्ता साहित्य में आचार, दर्शन, विचार दर्शन, जीवन दर्शन, इतिहास आदि अनेक बिन्दुओं का सम्यक बोध होता है। वार्ता साहित्य वल्लभ सम्प्रदाय को जानने समझने का प्रामाणिक माध्यम रहा है। इस पुस्तक में लेखक ने वार्ता साहित्य में अर्न्तनिहित तथ्यों, विचारों, इतिहास, दर्शन आदि पर शोध किया गया है। तदोपरान्त निष्कर्श देकर वार्ताओं की प्रामाणिकता को प्रस्तुत किया गया है।
12. भाटिया, मोहन स्वरूप (2019), चौरासी कोस ब्रज यात्रा, उदासीन आश्रम, रमणरेती, वृन्दावन। इस स्मारिका में ब्रज क्षेत्र के तीर्थ स्थलों का विवरण दिया गया है। 84 कोस की ब्रज यात्रा के बहुत ही लौकिक, पारलौकिक, तथा आध्यात्मिक सुपरिणाम अनेक शास्त्रों में वर्णित हैं। 84 कोस में विस्तीर्ण ब्रज क्षेत्र न केवल दिव्य तथा चिन्तन का पुण्य क्षेत्र माना जाता है। वरन् श्री कृष्ण का स्वरूप ही है। इस क्रम में ब्रज की यात्रा न केवल अलौकिक अद्वश्ट को उत्पन्न करती है वरन् परिक्रमा क्रम में आये श्रीकृष्ण लीला के दर्शन से प्रेमानुभूति भी होती है। इस स्मारिका में ब्रज की 84 कोस की परिक्रमा के महत्व तथा उनके स्थलों का वर्णन भी किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. ब्रज की यात्राओं की ऐतिहासिकता का अध्ययन करना।
2. ब्रज चौरासी कोस यात्रा में पड़ने वाले स्थलों, सरोवरों, कुंडों तथा मन्दिरों का विवरण प्राप्त करना।
3. ब्रज चौरासी कोस यात्रा के धार्मिक तथा सांस्कृतिक महत्व का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

ब्रज मण्डल परिक्रमा की ऐतिहासिकता काफी समृद्ध रही है। श्रीकृष्ण के लुप्त हो चुके लीला स्थलों की पहचान करके पुनः स्थापन करने का अलौकिक कार्य स्वामी वल्लभाचार्य, गोस्वामी विट्ठलनाथ, चैतन्य, महाप्रभु तथा अन्य वैष्णव सन्तों द्वारा किया गया। यथार्थ में, ब्रज यात्रा की परम्परा का निवर्हन मध्यकालीन भारत में ही विधिवत् प्रारम्भ हुआ। ब्रज यात्रा एक अलौकिक अदृष्ट को ही उत्पन्न नहीं करती है वरन् परिक्रमा क्रम में श्रीकृष्ण के लीला स्थलो के दर्शन, पूजा तथा अर्चन से श्रीकृष्ण की प्रेमानुभूति तथा सामीप्यानुभूति की वाहक भी रही है। कृष्ण वंशीय वज्रनाभ तथा उद्धव की ब्रज यात्रा के बाद लुप्त प्राय इस अद्भुत ब्रज चौरासी कोस यात्रा वर्तमान में सहत्र परिक्रमार्थीजनों की प्रेरणा तथा दिशा निदर्शन का माध्यम रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *श्रीमदभागवत महापुराण, दशमस्कन्ध, अध्याय 38*
2. *वही, अध्याय 78*
3. *शर्मा, हरिप्रसाद जी, ब्रज यात्रा तथा स्वरूप, 1999, श्री वल्लभ विद्या विभाग, कामवन–भरतपुर, पृ०33*
4. *स्कन्द पुराण, द्वितीय वैष्णव खंड, प्रथम अध्याय, श्रीमद भागवत*
5. *ब्रज यात्रा तथा स्वरूप, पूर्वोद्वित, पृ०33*
6. *ब्रज यात्रा तथा स्वरूप, पूर्वोद्वित, पृ०33*
7. *ब्रज यात्रा तथा स्वरूप, पूर्वोद्वित, पृ०33*
8. *नागरी प्रचारिणी सभा से प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थ 'ब्रज चौरासी कोस वनयात्रा'', पृ0 1*
9. *वही, पृ0 87*
10. *ब्रज यात्रा, पूर्वोद्धत, पृ0 36*
11. *कांकरौली का इतिहास, पृ0 49*
12. *लाल शेष, ब्रज यात्रा की परम्परा (सम्पादित, गोविन्दास रामनारायण अग्रवाल), पृ0 98*
13. *कांकरौली का इतिहास, पृ0 49*
14. *ब्रज और ब्रज यात्रा, पूर्वोद्धत, पृ0 98*
15. *वही, पृ0 98*
16. *ब्रज और ब्रज यात्रा, पूर्वोद्धत, पृ0 99*
17. *ब्रज और ब्रज यात्रा, पूर्वोद्धत, पृ0 101*
18. *मीतल, प्रभुदयाल, पूर्वोद्धत, पृ0 88*
19. *शेष श्री चुन्नीलाल – पूर्वोद्धधृत पृ0–106*
20. *वही, पृ0 88*
21. *ग्राउस, एफ0एस0, मथुरा–ए डिस्ट्रिक मेमायर, तृतीय संस्करण (1902), पृ0 38*
22. *वही, पृ0 106*
23. *दास, गोविन्द, अग्रवाल, राम नारायण, ब्रज और ब्रज यात्रा, भारतीय विश्व प्रकाशन, दिल्ली, (1959)।*
24. *भास्कर, उमा, मथुरा महात्म्य, वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन, (1994)।*
25. *महाराज, श्रीस्वरूपदास, श्री श्री गोवर्धन परिक्रमा, षब्द संयोजक, मथुरा, (2011)।*
26. *शर्मा, मुरलिका, रसीली ब्रज यात्रा, श्रीमान् मन्दिर सेवा संस्थान, बरसाना, मथुरा, (2014)।*
27. *कंछल, बनवारी लाल, श्रीकृष्ण की लीलास्थली, मथुरा–वृन्दावन, मनोज पब्लिकेषंस, दिल्ली, (2018)।*